290 में निर्देश्वरी आ मि परमेश्वरी "2" मार्व विन्देश्वरी **** राजराजेश्वरी बीच भवर में नैया डोले अअअ महिंद आ बीच अंवर में नेचा डोले, निर्या है गहरी-में नीख मह्म विन्देश्वरी आता राजराजेश्वरी ॥२॥ # अकेला भटक रहाहूँ-भँवर में अटक रहाहूँ-**मर्स्** अकेला. श्री चर्गों में तेरे-में स्पर को पटक रहा हूं-मंद्र श्री चर्गों. आश का पंही तड़प रहा है 55555 में 55555 आश्का पहीतड्प रहाहै-विनय सुनो हमरी-मह विनयस्ने मा विन्देश्वरी अन्य राजराजेश्वरी ॥ था बीच भंवरमे 💠 द्यालू दीड़के आओ-भँवर् से मुझेबचाओ- हो द्यालु-वची है संासजरा सी-मुझेना अब तड़पाओ-में बचीहै सांसो की ये डोर न दूरे 5554 मही 5556 सांसो की येडोर्न ट्रे-बना देव बिगरी-महिंबनादेव में विन्देश्वरी अपराजेश्वरी ॥२॥ बीच अंवरमे # अरे हैं नीर नयन में-नेरी मूरत है मन में ॥ था महूँ भरे हैं-चटा चनचीर है हाई-नहीं तारे गणन में मही बटा बनबीर-"भीवावाधी"में तुम्हे पुकारे अध्य में ध्राध श्रीवाबाशी"मर्ल तुम्हें पुकारें-मर्जी हे तुमरी--मर्ल मर्जी है---मर्जू विन्देश्वरी " राजराजेश्वरी ।।२।। बीच भवर् में---